।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

अमृत वचन

जिसका स्वभाव जैसा होता है वह वैसा ही काम करता है उस स्वभाव को कभी नहीं छोड़ता है।

- चाणक्य

वर्ष ३१, अंक ११ एक प्रति : २ रुपये

सोमवार ११ फरवरी, २००८ से १७ फरवरी, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६४ दयानन्दाब्द : १८४

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ वार्षिक : १०० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

प्रगति मैदान में 18वां विश्व पुस्तक मेला सम्पन्न

विश्व पुस्तक मेला – एक सशक्त प्रचार माध्यम

अन्य मेलों में भी वैदिक साहित्य का स्टाल लगाएंगे : ब्र. राजसिंह आर्य

विश्व पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य की खूब धूम रही। शनिवार

सत्यार्थ प्रकाश ने फिर बनाया बिक्री का रिकार्ड

२ फरवरी, ०८ को उद्घाटन हुआ तत्पश्चात् वैदिक साहित्य की बिक्री शुरू हुई तथा रविवार १० फरवरी, ०८ समापन तक निरन्तर चलती रही और स्टॉल पर पब्लिक का तांता लगा रहा। वैदिक साहित्य में लोगों ने खासी रुचि दिखाई साथ ही सुझाव भी दिए कि चारों वेदों व सत्यार्थ लगी; यहां से भी खरीद रहे हैं। कीमत भी ठीक है। **आचार्य बलदेव जी,** प्रधान हरियाणा प्रतिनिधि सभा भी स्टाल पर पधारे तथा स्टाल लगाने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को बधाई देते हुए इस प्रचार

वेद के अन्य संस्करणों की मांग रही विशेषकर युवाओं में

कार्य को सराहनीय एवं अनुकरणीय कार्य बताया। गाजियाबाद से आये **श्री सतेन्द्र यादव** ने सुझाव दिया कि आर्य मुसाफिर व सुखलाल आर्य के पुराने भजनों का संग्रह सी.डी. में उपलब्ध करना चाहिए। **श्री यशपाल वर्मा** रोहिणी जो आर्य समाज के वर्तमान स्वरूप से कुछ खिन्न से थे, उनको आर्यसमाज का स्टाल मेले में देखकर आश्चर्य हुआ कि आर्यसमाज इस तरह प्रचार कार्य भी कर सकता है। **डॉ० सरस्वती बाली,** प्रो० कालिन्दी कालेज पटेल नगर कहती हैं कि

प्रकाश को डी.वी.डी. तथा सी.डी. में उपलब्ध कराया जाना चाहिए, क्योंकि आज कल कम्प्यूटर का जमाना है। न तो लोगों के पास इतना समय है और न ही इतने बड़े साहित्य को रखने की जगह। **श्री एच.सी.गोयल** धर्मशाला हिमाचल से पधारे तथा कहते हैं कि हमनें कुछ पुस्तकें धर्मशाला में आपके स्टाल से खरीदी थी, काफी अच्छी

स्वामी दयानन्दकत वेदों का असली संस्कत भाष्य चाहिए।

श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी (राज्यपाल कर्नाटक) ने अत्यन्त सुन्दर संग्रह एवं आर्यसमाज के विषय में महत्वपूर्ण साहित्य कम कीमत पर उपलब्ध कराने के लिए बधाई दी।

– शेष पष्ठ २ पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०) के तत्वावधान में आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 के सहयोग से

स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

एवं वेदवाणी प्रसारण के तीन वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

भव्य भजन संध्या का आयोजन

रविवार दिनांक २ मार्च, २००८ सायंकाल ३.०० से ७.०० बजे

स्थान : आर्यसमाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-१, नई दिल्ली- ११००४८

इस अवसर पर गत वर्षों में वेदवाणी प्रसारण में सहयोग देने वाले महानुभावों को सम्मानित भी किया जाएगा।

समस्त आर्यजन भारी संख्या में पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें एवं पुण्य के भागी बनें हैं।

-: निवेदक :-

ब्र० राजसिंह आर्य	विनय आर्य	अनिल तनेजा	रामकृष्ण तनेजा	एल.आर. रिहानी	एम. एल. छाबड़ा
(प्रधान)	(महामन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली			आर्यसमाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश पार्ट-१, नई दिल्ली		

संयोजक समिति : हरबंसलाल कोहली, पुरुषोत्तम गुप्ता, एस०पी० सिंह, सुरेश चन्द्र गुप्ता, विद्यामित्र ठुकराल, सत्येन्द्र मिश्रा, अजय सहगल।

गतांक से आगे

महर्षि दयानन्द का अन्तिम संस्कार 212

— स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

स्नान कराने के उपरान्त महाराज की देह को चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओं से शोभित किया गया। फिर उसे बहुमूल्य वस्त्रों में वेष्टित करके, पलंग पर प्राण–त्याग आसन में स्थापित किया गया। उस समय सैंकड़ों मनुष्य उनके अन्तिम दर्शनों को दौड़े आकर, अपने नेत्रों की सहस्र धाराओं से उस कोठरी की भूमि को भिगोते थे। वहां ऐसा प्रतीत होता था कि आज यहाँ शोक के सातों सागर उमड़े पड़े हैं। जिस समय महाराज की देह को उठाने के लिए भक्तजन विमान बनाने लगे तो पण्ड्या मोहन लाल जी ने भ्रात मण्डल के सामने निवेदन किया 'श्रीमन्महाराणा श्री सज्जन सिंह जी ने मुझे चलते समय आदेश किया था यदि हम लोगों के दुर्भाग्य से महाराज का शरीर छूट जाए, तो किसी प्रकार तीन चार दिन पर्यन्त उसका दाह कर्म न किया जाए, जिससे मैं और उनके दूसरे शिष्य राजे महाराजे उनके अन्तिम दर्शन पा सकें, उनके दाह–कर्म में सम्मिलित हो सकें। परन्तु प्रभु के उपस्थित प्रेमियों ने दाह कर्म उसी दिन कर देना ही उचित समझा। शिविका पुष्पों, कदली स्तम्भों और कोमल पत्तों से सुसज्जित की गई, दिन के दस बजे महाराज की अरथी उठाई गई। उस समय सैंकड़ो सज्जन नंगे पांव उनके पीछे चलते थे। राय भागराम भी नंगे पांव साथ थे। महाराज के, शिविका में पड़े शव को पंजाबी सैनिक अपने बलिष्ठ कन्धों पर उठाए वाहन कर रहे थे। रामानन्द जी और गोपालगिरी जी आदि आगे आगे वेद–पाठ करते चले थे। अजमेर नगर के आगरा द्वार से होते हुए बाजारों और चौकों का उल्लंधन करते नगर से बाहर दक्षिण भाग में शिविका पहुंचाई गई।

वेदी बनने में कुछ देर जानकर पण्डित भागरामजी ने आर्यों के डाँवाडोल मनों को धैर्य बंधाते हुए स्वर्गीय स्वामीजी के गुण–कीर्तन किए। उनके उपकार बताए और स्वामीजी के उद्देश्यों की परिपूर्ति के लिए स्वामी भक्तों को प्रोत्साहन दिया। यद्यपि पण्डित महाशय का कण्ठ बीच में वाष्प से बारबार रुक जाता था, फिर भी उन्होंने यथा तथा करके अपना हृदय प्रकाशित कर ही दिया।

तत्पश्चात् रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल जी कलेजे को कड़ा करके कथन करने लगे। परन्तु वे तो दो चार शब्दों ही में शोक–सागर में डूब गए। उनके दोनों नेत्रों से बहते हुए अश्रुओं ने उनके वक्ष–स्थल को गीला कर दिया उनका गला इतना रुक गया कि वे आगे कुछ भी न बोल सके।

वेदी बन जाने पर भक्त लोगों ने दो मन चन्दन और दस मन पीपल की समिधाओं से चिता चयन की। अपने टूक टूक होते हृदयों को थाम कर उन्होंने गुरुदेव के शव को उस अन्तिम शय्या पर शायीं कर दिया। रामानन्द और आत्मानन्द जी ने यथाविधि अग्न्याधान किया। अग्नि स्पर्श होते ही घतसिंचित चिता, ज्वाला माला से आबत हो गई। उस दाह–कुण्ड में चार मन घी, पांच सेर कपूर एक सेर केसर और दो तोले कस्तूरी डाली गई। चरु और घत की पुष्कल आहूतियों से हुत श्री महाराज का शव प्रेमियों के नीर भरे नेत्रों से देखते ही देखते अपने कारणों मे लय हो गया। महाराज की अमर आत्मा तो जागतिक ज्योति में पहिले ही लीन हो चुकी थी। सेवकों ने उनके शरीर को भी ज्योति शय्या पर आरूढ़ करके उसके तात्विकरूप में पहुंचा दिया।

गुरु महाराज की दुर्लभ देह का दाह–कर्म करने के अनन्तर, अति शोकातुर आर्यजन नगर को लौट आए। उस दिन वे अपने को निःसार और निसत्व समझते थे, प्रत्येक कार्य में अनमने से हो रहे थे। अपने अति प्यारों को भी देखकर उनको प्रसन्नता नहीं होती थी। उनको अपने देह के दीवट पर धरा हुआ मन का दीया प्रसन्नता की ज्योति से सर्वथा शून्य जान पड़ता था। कार्तिक शुक्ला द्वितीया को पण्डया मोहन लाल जी ने महाराज के स्वीकार पत्र के अनुसार उनकी सारी वस्तुओं पर अधिकार कर लिया और कागज–पत्रादि उदयपुर भेज दिए। भगवान् की अस्थियों को चयन करके, शाहपुराधीश के दिए उद्यान में गाड़ दिया गया। यह उद्यान अन्नासागर के किनारे पुष्कर की सड़क पर है।

— 'श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश' से

क्रमशः

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रसिद्ध उद्योगपति **श्री आनन्द चौहान** व **श्रीमती मदुला चौहान जी** स्टाल पर पधारे तथा देखकर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि अति उत्तम कार्य हो रहा है तथा वहीं खड़े–खड़े १०००/–रुपये के सत्यार्थ प्रकाश खरीद कर निःशुल्क वितरित करवा दिये। इन सब बातों को देखते हुए तथा पिछले चार पुस्तक मेलों से मिले अनुभव के आधार पर हम एक बात अवश्य कह सकते हैं, कि पुस्तक मेलों के माध्यम से हम और आप जनता के साथ जुड़ते हैं तथा प्रचार का यह एक अहम माध्यम है। हम उदाहरणार्थ देखें कि एक आर्य समाज का वार्षिक उत्सव होता है तो हम देखते हैं कि आस–पास के आर्य समाजों के सदस्य वहीं पर आते हैं या अधिक से अधिक लंगर हुआ तो कुछ आस–पास के दूसरे लोग आ जाते हैं। इसे हम अपना प्रचार कार्य समझ कर संतुष्ट हो जाते हैं, या बड़ा आयोजन हुआ तो दिल्ली की आर्यसमाजें एकत्र हो जाती हैं। इन बातों को कहकर मेरा उद्देश्य इसतरह के आयोजन का विरोध करना नहीं है अपितु प्रचार कार्य हेतु ठोस योजनाएं बनाने का आग्रह मात्र है। पुस्तक मेलों में स्टाल पर पधारने वालों में कम से कम ६० प्रतिशत वे लोग होते हैं, जिनका आर्यसमाज से कोई विशेष वास्ता नहीं होता तथा कम से कम ८० प्रतिशत साहित्य भी ऐसे लोग खरीदते हैं। इस तरह वे आर्य समाज के विषय में जानकारी हासिल करते हुए समाज के निकट आते हैं क्योंकि साहित्य को पढ़ने से उनके मन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन का प्रचार–प्रसार होता है। इस कार्य को और बड़े स्तर पर संगठित होकर करने की आवश्यकता है। आप सभी इस कार्य को अपना कार्य समझकर सहयोग करें तो आर्यसमाज की कीर्ति देश के कोने–कोने में पहुंचने में देर नहीं लगेगी। स्टाल पर भारी मात्रा में सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, चारों वेद, वेदों का अंग्रेजी में संक्षिप्त अनुवाद, ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र, योग–ध्यान तथा अन्य इसी प्रकार का साहित्य तथा 'सत्य की राह' सीडी और अन्य सीडी, वीसीडी कैसेट्स उपलब्ध रही तथा बिक्री भी हुई। जिन लोगों ने स्टाल के लगाने में किसी भी तरह का सहयोग दिया है। मैं उन सभी का आभारी हूं। वेद मन्दिर धर्मशाला (हिमाचल) का अच्छा सहयोग मिला। **श्री शिव कुमार मदान, श्री रमेश आर्य, श्री अशोक कुमार गुप्ता, श्री ओमप्रकाश, भटनागर, श्री वेदव्रत जी, श्री रणवीर सिंह एवं श्री ओमप्रकाश शर्मा** ने बड़े ही उत्साह एवं श्रद्धा भाव से अपनी सेवाएं देकर इस प्रचार के पुनीत कार्य में अपना पूर्ण निःशुल्क सहयोग दिया। इन सभी महानुभावों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। ❑

वेदों की सत्यता बताने के लिए हुई विश्वविद्यालय में वेद संगोष्ठी

युवापीढ़ी ने वैदिक विचारों को मान्यता दी

५ फरवरी, ०८ को दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर (नार्थ कैम्पस) के आर्टस फैक्ल्टी के हाल नं०२२ में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों विद्यार्थियों, प्रवक्ताओं, प्राध्यापकों तथा विद्वत्जनों ने विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों में भ्रान्तिजनक विषयों पर विचार-विमर्श किया। मुख्य मुद्दा बी०ए० फाउण्डेशन कोर्स की जेंडर स्टडी पुस्तक से सम्बन्धित है, जो वेदों में नारी के प्रति भेदभाव एवं समलैंगिकता के समर्थन को दर्शाता है। इतिहास (आनर्स) की पुस्तक के अन्तर्गत रामायण व राम के तीन सौ रूपों को पढ़ाया जा रहा है। (विस्तार में देखें आर्यसंदेश ३ फरवरी, ०८ का अंक)

वैदिक विचारधारा को उजागर करते हुए दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान **आचार्य धर्मपाल आर्य** ने वेद एवं मनुस्मति में से उदाहरण देते हुए बताया कि वेदों में नारियों को अत्यन्त सम्मानीय स्थान दिया गया है और नारी जाति के प्रति अनादर और हीन भावना बिल्कुल निरर्थक हैं। उन्होंने हनुमान के विषय में बाल्मीकि रामायण से प्रमाण देते हुए उन्हें वेद शास्त्र और व्याकरण का विद्वान बताया।

पूर्व सांसद **डॉ० सोंकार शास्त्री** ने संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज ने वेदों पर काफी शोध किया है और वेद में कोई भी ऐसा मंत्र नहीं है जो नारी जाति को हीन दर्शाता हो। **डॉ० सुब्रामणियम स्वामी** (पी०एच०डी० हारवर्ड) प्रधान जनता पार्टी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आर्यों का भारत पर आक्रमण एकं मिथ्या वक्तव्य है। उन्होंने सूचित किया कि डी०एन०ए० टैस्ट के आधार पर यह सिद्ध किया जा चुका है कि ६५ प्रतिशत वर्तमान पीढ़ी आर्यों की वंशज हैं। उन्होंने आगे कहा कि दक्षिण भारत में रामायण के अनेक भ्रान्तिपूर्ण संकलन उपलब्ध हैं जिनमें से प्रत्येक का अपना कथानक है। दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाने वाली ए० रामानुजम द्वारा रचित पुस्तक के अन्तर्गत ''तीन सौ रामायण'' वाला परिच्छेद तुरन्त कोर्स की पुस्तक में से हटा देना चाहिए।

एन०डी०एफ०टी० के अध्यक्ष डॉ० अवस्थी ने उपस्थित सभा को आह्वान किया कि हमें दिल्ली विश्वविद्यालय के गलत व भद्दे कार्यों का एक बड़े विरोध करने के लिए एकजुट होना है। गोष्ठी का आयोजन शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति की ओर से **श्री दीनानाथ बत्रा जी** के विशेष प्रयासों से किया गया। **श्री सुन्दर आर्य जी** ने इस गोष्ठी के आयोजन में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। ❑

"परमात्मा ही सर्वस्व है"

परमपिता परमेश्वर ही सष्टि का सर्वस्व है। सष्टि ही हर शैह पर उसका अधिकार है। हर शैह की उत्पत्ति, विकास तथा संहार उसकी देखरेख में होता है। हर शैह का ज्ञाता है, मूल है, कारक तथा उपादान है। हर शैह में गुणात्मक विशेषता भरता है। हर शैह एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी पूरक है। सबको संचालित करता है, नियंत्रित करता है तथा काम लेता है। सष्टि में ऐसे भी कई पदार्थ है जिनको हम जानते नहीं परमेश्वर पूर्ण जानता है। सब उसके अधीन है। अपने अति व्यवस्थित नियमों के अर्न्तगत सबका संचालन तथा मार्गदर्शन करता है। उसकी इच्छा बिना किसी वस्तु पदार्थ, जड़, चेतन जीव–जन्तु की कल्पना नहीं की जा सकती। जो कुछ है उसी का रचाया–बसाया है। जो है, जिसे हम जानते नहीं वे भी उसी की देन है, उसी की कति है।

जितने भी जड़ पदार्थ हैं, उनमें स्वाभाविक गुण–दोष दे रखे हैं, उनमें बनने बिगड़ने की स्वतः प्रक्रिया चलती रहती है। सब जड़ वस्तुएं उसकी वैज्ञानिक विधि व्यवस्था के अंतर्गत प्रक्रियारत विकसित होती है। उनमें जो भी स्वाभाविक परिवर्तन होते हैं, उनको कोई बदल नहीं सकता, न कोई हस्तक्षेप कर सकता है। स्वभाव की भिन्नता के कारण उनका रूप रंग योनि परिवर्तन होता है, पर सब एक दूसरे से सम्बद्ध रहते हैं। गुणदोष की मात्रा भेद के कारण उनमें कुछ भिन्नता आ जाती है पर सब अपने मूल से जुड़े रहते हैं। चेतन जीवों का अवागमन अनवतर प्रवाहमान है। कभी रूकता नहीं, कभी थकता नहीं। बिना कहे, बिना बताये, बिना पूर्वाग्रह के ये चक्र के ये चक्र निरन्तर चलता रहता है। सष्टि के प्रथम दिन से शुरू होकर सष्टि के आखिरी दिन तक चलता रहता है। करोड़ों अरबो जीव जन्मते तथा मरते हैं। उत्पत्ति तथा विकास का क्रय निरन्तर चलता रहता है। हर जीव का दायरा निश्चित है। उसी दायरे में वह कार्य करता है। उसके आगे जाने की न तो उसमें शक्ति है, न ही अनुमति। हर जीव परमेश्वर से जुड़ा हुआ है। हर जीव चाहे किसी योनि का हो, उसे ही पुकारता, उसे व्यथा सुनाता है और उसी से जीवन की अन्तिम घड़ी तक प्रभु की शक्ति समायी रहती है। शक्ति है तो वह जीव है, नहीं तो जड़ है। जीव का जीवनदाता होने के नाते प्रभु ही उसका हितैषी है। अतः जीव उसे ही पुकारता है।

परमात्मा के नियम सर्वकालीन हैं, सर्वव्यापक हैं। जो समान रूप से लागू होते हैं। जीव का जीना–मरना फल का परिणाम है। उसे वैसा ही भोगना पड़ेगा जैसा पिछला रिकार्ड है। केवल तीन साधनों से जीव अपना कायाकल्प कर सकता है अर्थात् जीवन में परिवर्तन ला सकता है। पहला उसकी पुकार उसकी तड़प में–तीव्रता हो आकर्षण कशिश हो, जो चाहता है भीगे नयनों से कह डाले। दूसरा–वह प्रभु से इतना गहरा जुड़ जाए कि प्रभु का ध्यान बरबस ही आकर्षित कर लें। अपने को उस सांचे में ढाल ले कि प्रभु के अतिरिक्त उसे कोई कर्ता ही न दिखे। कोई और हितेषी ही न नजर आये। कोई और आश्रय ही न नजर आये। पूरीतरह प्रभु से बंध जाए।

तीसरा–प्रभु पूर्ण चैतन्य, कपामय दयालु, महान्तम व्यक्तित्व है। वह स्वयं जब ध्यानावस्था में सष्टि पर दष्टि डालता है तो उसे कोई खास जीव, खास प्यारा नजर आता है जिससे वह खुद ब खुद प्रभावित होता है। तीनों ही स्थितियों में परमेश्वर की कपा बरसने लगती है। जीव का उद्धार होता है, कल्याण होता है, भक्ति करने का सुयोग मिलता है।

हमें अपने जीवन में कभी–कभी ऐसे चमत्कार देखने को मिलते हैं, जिसे देखकर मन हैरत में पड़ जाता है, विश्वास नहीं होता। पर ये सब प्रभु कपा का ही चमत्कार है। कब किस पर कितनी कपा कर दे, यह वही जानता है। जिसे जितनी कपा मिलती है, उस सीमा तक सुखी रहता है। वैसे सबका अपना–अपना अनुभव होता है। जिसे कभी–कभी शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसे पाकर जीव धन्य–धन्य हो जाता है, मन ही मन उसका धन्यवाद करता है। उसकी आंखे नम होती हैं। चेहरे पर दिव्य मुस्कराहट होती है, हदय में दीवानगी आ जाती है।

परमेश्वर से हमें उसकी कपा ही मांगनी चाहिए। वह हमारे अन्दर के हर भाव को जानता है हमारी मंशा से अवगत होता है। हमारी पात्रता का भी उसे पूरा ध्यान है। जरूरत है तो बस उससे अपना नाता दढ़तम करने की। समर्पण करने की, उसकी शरण पाने की तथा उसके धाम में स्थायी रूप से बसने की।

जितनी दढ़ भावना होगी, उतनी श्रद्धा बलवती होगी। जितनी श्रद्धा बलवती होगी उतनी सुनवाई जल्दी होगी। फिर देखो प्रभु की कपा कैसे रंग जमाती है। आनन्द की झड़ी लगती है। आत्मा धन्य–धन्य हो जाती है नर तन पाने का लक्ष्य पूरा होता है। और आवागमन छूट जाता है। शुद्ध, बुद्ध, प्रबुद्ध जीव प्रभु के सामने खड़ा होता है। परमात्मा सब पर ऐसी कपा करें।

– विनोद महाजन नाचीज

जितने भी चेतन जीव हैं। वे भी आवागमन के चक्र बंधे है। गुर्णकर्म यश–अपयश, हानि–लाभ पूर्व निर्धारित होता है। आज वो जो है, उसी कर्म

बोध कथा

निष्काम सेवा

– महात्मा आनन्द स्वामी

मुल्तान में प्लेग फैल गई। प्रत्येक स्थान पर आर्यसमाज के निःस्वार्थ सेवक पहुंच गए। मुलतान में प्लेग का वेग बढ़ा तो नगर के कई भाग वीरान हो गए। महान् आत्मा पण्डित रलाराम जी के साथ मैं वहां कार्य कर रहा था। नगर में चहुं ओर सूना था। पति–पत्नी को छोड़कर चला गया, पत्नि पति को; भाई ने भाई को छोड़ दिया और पुत्र ने पिता को। एक मुहल्ले से कुछ सेवक सूचना लाए कि एक लाला जी यहां रुग्ण हैं। प्लेग हो गई है। घर के सब लोग भाग गए हैं। उन्हीं दिनों पादरी स्टोक्स भी वहां कार्य कर रहे थे। पण्डित रलाराम जी ने लाला का हाल सुना तो बोले, 'चलो वहां चलें।'

उनके साथ मैं वहां पहुचा तो देखा कि बेचारे लालाजी की दशा बहुत चिन्ताजनक है। पण्डित रलाराम जी को प्लेग के रोगी–देखते–देखते पर्याप्त अनुभव हो गया था। लाला जी की गिल्टी बहुत पक गई थी। वह चमक रही थी। उसे देखकर बोले – 'ऑपरेशन के बिना यह व्यक्ति बचेगा नहीं। दौड़कर जाओ, किसी डॉक्टर को बुला लाओ।'

मैंने कहा – ' इस समय डॉक्टर कहां से मिलेगा।'

वे बोले – 'डॉक्टर नहीं हो कोई जर्राह, कोई नाई बुलाओ।'

मैंने कहा – 'पण्डित जी, इस समय कोई नाई नहीं मिलेगा। सब लोग तो भाग गए है, यहां कौन आएगा?'

वे बोले – 'अच्छा भाई, घर में ही देखो, कदाचित कोई चाकू या छुरि मिल जाए।'

मैंने खोजा, वहां चाकू या छुरी भी नहीं मिली। पण्डित जी ने कहा – 'अच्छा स्प्रिट तो तुम्हारे पास है। उससे इस गिल्टी को स्वच्छ कर दो।'

मैंने रूई स्प्रिट में भिगोया, गिल्टी को साफ कर दिया। पं० रलाराम जी की दाढ़ी पर्याप्त लम्बी थी। उसे हाथ से पीछे हटाकर वे नीचे झुक और दांतों से उस गिल्टी को काट दिया।

यह है निष्काम सेवा की भावना ! ऐसी भावना जिस व्यक्ति के मन में होगी, वहां चित्त का मैल रहेगा कहां? निष्काम सेवा से मन में जो प्रसन्नता होती है, उसे वही लोग समझते हैं जो ऐसी सेवा करते हैं।

तरुवर फले न आपको, नदी न पीवे नीर। परमारथ के कारने, सन्तन धरा शरीर।।

❑

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (26)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

<u>**कत्स्वप्रसक्ति र्निरव्यवत्व शब्दकोपो वा।। २६।।**</u>

<u>अर्थ :-</u> (कत्स्न प्रसक्तिः) सम्पूर्ण उपादान तत्व (प्रकति) के कार्यरूप में परिणत होने का प्रसंग उत्पन्न होगा। (निरवयवत्व शब्दकोपः) ब्रह्म को निरवयव बताने वाली श्रुति का विरोध होगा (वा) अथवा।

भावार्थ :- चेतन ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त और सर्वान्तर्यामी है। वह एकमात्र ऐसा तत्व है। कार्यजगत का उपादान तत्व प्रकति है। यदि यह मानें कि सष्टि रचना का संकल्प ब्रह्म में होता है तो उसके अधीन उसके द्वारा नियंत्रित संपूर्ण प्रकति कार्यरूप में परिणत हो जाएगी। तब सष्टि की रचना के समय कार्यजगत को छोड़कर प्रकति का कोई भी अंश बचना नहीं चाहिए। ऐसा सोचना ठीक नहीं है, क्योंकि प्रकति अनन्त है, अनन्त प्रकति के सीमित जगत् के रूप में परिणत होने की बात बुद्धिग्राह्य नहीं है। और यदि यह मानें कि उसके द्वारा नियंत्रित प्रकति का कुछ अंश ही कार्यरूप में परिणत होगा तथा शेष अंश मूलरूप में विद्यमान रहेगा तो ब्रह्म निरवयन नहीं रहेगा; क्योंकि उसका एक अवयव कार्यजगत् और दूसरा अवयव मूल प्रकति होगा। ऐसी स्थिति में शब्द अर्थात श्रुति से विरोध होगा, क्योंकि श्रति में ब्रह्म का निष्कल और निरवयव रूप में वर्णन है। श्वेताश्वतर उपनिषद् (६.१६) में कहा है–

<u>"निष्कलं निष्कियं शान्तं निरवयवं निरंजनम्।।"</u>

वह ब्रह्म दोषरहित, निष्कलंक, निरवयव, क्रियारहित शान्त, और निर्मल है। इसी प्रकार अन्यत्र मुंडक उपनिषद् (२.१२) में भी कहा है कि–

<u>"दिव्यो ह्यमूर्नतः पुरूषः स बाह्याभ्यन्तरो ह्यजः।।"</u>

अर्थात् वह ब्रह्म प्रकाश युक्त होता हुआ भी अभूर्त है। वह सष्टि के अन्दर–बाहर व्याप्त और अजन्मा है। ऐसे ब्रह्म में अवयवों की कल्पना से श्रुति के विरोध की बात होगी। अतः ऐसी स्थिति में यह निश्चय अधूरा रह जाएगा कि ब्रह्म संकल्प मात्र से जगत् के जन्मादि का कारण है। इस प्रकार सूत्रकार ने शिष्य की आशंका को पूर्वपक्ष के रूप में इस सूत्र में प्रस्तुत किया है।

– अब अगले सूत्र में सूत्रकार इसका समाधान प्रस्तुत करते हैं।

– सी-२ए/६० जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

Question & Answer

Vedas Prohibit Idol Puja

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : I changed my name because I thought you are not paying attention to my name. I want to learn everything you can teach me through distance education. I am at present more focused on my career but I am sure I will come to you for learning Vedas, Yajnas etc etc. Dear swamiji I have full faith in you but since childhood I have been attached to Lord Krishna, Lord Ram and now Shivaji. I observe fasts every month for at least 7 days , I also observe navratras (not akhand though). I want to ask you that if I continue my puja and fasts and also if I acquire spiritual and vedic knwledge and perform yajnas regularly will my prayers reach God? My feelings don't allow me to stop worshipping lord's statues. Lord krishna says" Bhagwan kan kan mein hain" toh kya statue ki her atom mein bhagwan ki puja galat hogi (I KNOW VEDAS PROHIBIT IDOL POOJA). I think I must tell you that I am not a very perfect person (as per Vedas) but I will SINCERELY try to change myself in your guidance. **Rashi**

Ans.: No, my daughter, change of name will make no difference. It is only good or bad qualities of a person which effect the society. So one should always do pious deeds for which one must listen Vedas, must do name jaap of God-Yajyen and meditation etc.

Your views are appreciated to learn spiritualism. One must get progress in both ways simultaneously i.e., spiritual and worldly education-science etc. It is a fundamental law that knowledge is gained only when it is given by anybody. Vedas state that a learned Acharya of Vedas and Ashtang Yoga Philosophy give knowledge. Why must we accept the preachings of Vedas? Because a deep discussion, study and invention reveals that the knowledge of four Vedas is originated in the heart of four Rishis at the time of every unsexual creation. The said knowledge of Vedas at that time emanates direct from God. Since the knowledge

वाल्मीकि रामायणे जीवनदर्शनम्

गत अंकेन क्रमेषुः-

चतुर्णामाश्रमाणां हि गार्हथ्यं श्रेष्ठमाश्रमम्।
प्राहुर्धर्मज्ञधर्मज्ञास्तं कथं त्यक्तुमर्हसि।। २/७४/६

वैवाहिकजीवमेव व्यक्तित्वस्य परिपूर्णतायाः परिचायकमित्यस्ति स्त्रस्थो दष्टिकोणः वाल्मीकेर्जीवनं प्रति। नारी पुरुषस्य आत्मा एव यया बिना सः अपूर्णः। इदं जीवनरहस्यं वशिष्ठमखादित्थमुद्घाटयति कविः।

आत्मा ही दारा सर्वेषां दारसंग्रहवर्तिनाम्।
आत्मेयमिति रामस्य पालयिष्यति मेदिनीम्। २/३७/२४

प्रगाढ़ं दाम्पत्यमेव गहस्थजीवनस्य साफल्यम्। तच्च पूर्वाचरितपुण्यैरेव प्राप्यते। राममनुगक्ष्छन्त्याः सीतायाः सौभाग्यमयोध्याया नार्यः एवं प्रशसन्ति–

तया सुचरितं देव्या पुरा नूनं महत्तप।
रोहिणीव शशांकेन रामसंयोगमाप सा।। २/१६/४१, ४२

रावणं भर्त्स्यन्ती राम प्रति स्वकीयं तादात्म्यं च अभिव्यजयन्ती सीता स्वयमाह –

शक्या लोभयितुं नाहमैश्वर्येण धनेन वा।
अनन्या राघवेणाहं भास्कोण प्रभा यथा। ५/१२/१०

सीतां प्रति रामस्य प्रणयोपि परां कोटि प्राप्तः। सीताहरणानन्तरं विरहव्याकुलो रामः सीतां प्रति स्वभवमित्थं व्यनक्ति–

र्माय भावस्तु वैदेह्यास्तत्वतो विनिवेशितः।
ममापि भावः सीतायां सर्वथा विनिवेशितः।। ४/१/१३

गहिणीं सीतां बिनां राम जीवितुमपि न शक्तः। स लक्ष्मणं वदति–

गच्छ लक्ष्मण पश्य त्वं भरतं भ्रातवत्सलम्।
न ह्यहं जीवितुं शक्तस्तामते जनकात्मजाम्।। ४/१/१७

– क्रमशः

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का

of Vedas emanates direct from God, so Vedas are self-proof and can never be denied. Please refer to the article on Vedas philosophy for your knowledge. Vedas deny idol worship and fasts. However, controlled, balanced diet must be taken to do Tapasya, details of which are mentioned in my book on "Brahamcharya" which is being sent to you and we must all happily accept this fact as accepted by all our ancient munis as well as Vyas muni, Guru Vashishth, King Janak, Dashrath, Harishchandra and their public. I am sending some spiritual books to you free of cost along with some cassettes.

Samveda mantra 275 states that he who studies Ved mantras deeply God is our friend for as than. Samveda mantra 210 states that God is pleased when we perform Yajyen and Atharvaveda mantra 4/24/1 states that God listens our prayer while performing Yajyen and kills our sins of previous lives etc. So one must observe the importance of doing Yajyen daily. Yes, first Sri Krishna studied Vedas from his Guru named Sandeepan Rishi and then he quoted the divine qualities of God that God is everywhere, which is related to Yajurveda mantra 40/1 wherein it is stated- Idam Eesha Vasyam, God Himself states that He is omnipresent. The ancient Rishi-Munis, Yogeshwer Sri Krishna, Sri Ram have stated the fact which they studied in Vedas i.e., their preach is hundred percent based on ancient, eternal and true knowledge of Vedas. This fact has also been mentioned by Sri Krishna in Bhagwad Geeta Shloka 13/4. The idea in the said Shloka is O Arjun! The ancient Rishis have already stated about the God,

Conti P. 6

वेद–वाणी

साधना चैनल

हर रविवार सायं 6.55 बजे

रविवार 17 फरवरी, 2008

-: प्रवचन :-

आचार्य अखिलेश्वर जी

-: प्रसारण-सहयोगी :-

आर्यसमाज कीर्ति नगर

नई दिल्ली–110015 **एवं**

श्री धर्मपाल आर्य एवं परिवार

सुशील जनरल स्टोर

आर. जेड़ - ई- 140, निहाल विहार,

नई दिल्ली–110041

निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

अष्टम् समुल्लास : सष्टि की उत्पत्ति-प्रलय स्थिति

गतांक से आगे :-

इस प्रकार पुरुष (जीव और परमेश्वर) को मिला कर ये पच्चीस तत्व कहलाते हैं। इनमें से प्रकति का मूलरूप अव्यक्त रहता, शेष सब स्थूल से स्थूलतर होकर उसकी विकतियां कहलाते हैं। परमात्मा इन विकतियों और प्रकति से अलग ही रहता है, यद्यपि यह सारी सजन–प्रक्रिया वह ही चलाता है। परमात्मा ही जीवों को उनके गुण–कर्म व भावानुसार इनसे बने स्थूल शरीरों से संयुक्त कर देता है। जीवों के शरीरों से संयोग को ही हम जन्म और इनसे वियोग को मत्यु कह देते हैं। परमेश्वर जन्म–मरण के चक्कर में नहीं पड़ता।

सष्टि प्रक्रिया एक अनादि और अनन्त प्रक्रिया है। सष्टि के प्रत्येक सजन के आदि के अनेक पुरूष एक साथ ही परमेश्वर की कपा से उत्पन्न होते हैं। बाद में मैथुनी सष्टि चलने लगती है। ये आदि पुरुष युवावस्था में ही पैदा हुए होंगे। वर्तमान सष्टि का आरम्भ तिब्बत या 'त्रिविष्टप' में हुआ होगा। मनुष्य जाति एक ही है आर्य दस्यु आदि भेद श्रेष्ठता–नीचता आदि के आधार पर किये गये। इसी प्रकार पढ़े–लिखे एवं अपढ़–अज्ञानियों के भेद के आधार पर द्विज, शूद्र आदि भेद किये गये। यह कथन सर्वथा गलत है। आर्य भारत में बाहर से आये। 'आर्य' कोई जातिविशेष न होकर 'श्रेष्ठ आचरण 'वाले पुरूषों का नाम है। अतः देवासुर संग्राम आर्य द्वारा असुरों को पराजित करके भारत में प्रवेश के समय नहीं लड़ा गया था, बल्कि महाराज दशरथ आदि आर्यावर्तीय राजाओं और पहाड़ों में स्थित दस्यु और म्लेच्छ राजाओं के बीच लड़ा गया था। आर्यावर्त से भिन्न देशें को ही म्लेच्छ एवं दस्यु देश कहा गया है। ब्रह्मा का पुत्र विराट्, उनका पुत्र मनु, उसके मरीचि आदि दस पुत्र, उनके स्वामम्भूव आदि सात राजा, और उनकी सन्तान इक्ष्वाकु आदि राजा आर्यवर्त के प्रथम राजा हुए और उन्होंने ही इसे बसाया है। अब आर्यों के आलस्यप्रमादादि एवं परस्पर विरोध कहलादि के कारण अभाग्योदय होकर आर्यों का अन्य देशों पर तो क्या, स्वयं आर्यवर्त पर भी

– शेष पष्ठ ६ पर

घात-घात पर घात आरक्षण की बात

– *देवनारायण भारद्वाज*

अतिथि सत्कार में खिलाए गये शहद की एक बूँद चबूतरे पर क्या गिरी कि उस पर मक्खियां टूट पड़ी। मक्खियों को खाने के लिए छिपकली दौड़ पड़ी। छिपकली को गपकने के लिए बिल्ली आ धमकी। बिल्ली पर दो कुत्ते छपट पड़े और आपस में लड़ पड़े। वे कुत्ते जिन परिवारों के पालतू थे, पहले उन परिवारों के बच्चे अपने-अपने कुत्ते के पक्ष में लड़ने लगे। लड़को के पक्ष में उनकी माताएं और फिर पुरूष भी युद्ध में कूद पड़े। तिल का ताड़ अथवा राई का पहाड़ होते देर नहीं लगती। कुछ ही दिनों के बाद मोहल्ले में हुआ उत्सव व प्रीतिभोज। उसमें सब एकत्र हुए। अभिवादन-सम्वाद हुआ और सब एक हो गये। इस प्रकरण में किन्हीं राजनेता का हस्तक्षेप हो जाता, तो वह अपने निर्वाचन में जिस पक्ष को भारी पड़ता देखता, उसी का समर्थन करता और शत्रुता की जड़े जम जातीं। अपने देश में उस बूंद की भाँति ही आरक्षण के छुद्र स्वार्थ हेतु सभी दौड़ लगा रहे हैं और मारामारी की अशोभन स्थिति उत्पन्न हो रही है।

अज्ञान, अन्याय, अभाव, विघटन, भूख, प्यास, आवास, शिक्षा, विद्युत, उत्पादन, अपराध आदि की अन्यान्य समस्याएं जैसे सभी हल हो चुकी हो और अब तो भण्डार भर गये हैं चलो अपने-अपने लिए सब आरक्षित करा लें। 'रक्ष' धातु से व्युपन्न रक्षक शब्द रक्षा करने वालों एवं पालनकर्ता के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जब यह 'रक्ष' भविष्यत व वर्तमान सब विद्यायें वेद से ही प्रकट हुई हैं, होती है और होंगी। वर्ण वर्गीकरण में ऊँचनीच का भेदभाव नहीं, गुण-कर्म-स्वभाव की प्रभावशीलता का सम्मान समाहित रहता है। दायित्व पूर्ण द्विजत्व की गरिमा या अवहेलना से वर्ण को अन्तरण भी संभव है। देखिये मनुजी का निर्देश शूद्रों ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम।

क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्या
द्वैश्यान्तयैव च।। *मनु० १०.६५*

शूद्र ब्राह्मण हो जाता है और ब्राह्मण शूद्र हो जाता है-कर्मानुसार वैसे ही क्षत्रिय एवं वैश्य के विषय में भी जान लेना। वर्ण-वर्ण इसलिए है कि वह व्यक्ति द्वारा वरण किया जाता है, किसी पर थोपा नहीं जाता है। लगता है कि कालान्तर में कार्य विभाजन व्यक्तियों के व्यवसाय -धन्धे के रूप में दढ़ हो गये और उन्हीं को उनकी जाति मान लिया गया। इन्हीं जातियों को ऊँच-नीच में वर्गीकत करने का काम अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो की नीति के अन्तर्गत निष्पन्न कर दिया। स्वतन्त्रया प्राप्ति के बाद चुनाव की सफलता और दष्टि से जातियों को सामान्य, पिछड़ी व अनुसूचित के रूप में स्थापित कर दिया गया। वोट-नोट, चोट की छद्म राजनीति ने देश के नागरिकों में सकती है, जैसा कि मनु जी के यथोपरि कथन से स्पष्ट है। वर्तमान में साथ-साथ पढ़ने वाले, मोहल्लों में साथ रहने वाले व साथ खेलने खाने वाले बच्चों में ऊँच-नीच का कोई विभेद नहीं रहता है। यह देवी बड़े लोग ही होते हैं जो बच्चों के मन में घणा -विग्रह का कलुष घोलते हैं।

जाति भेद के आधार पर आरक्षण करने पर जाति विशेष के प्रमाण-पत्र प्राप्त करने पर परिवाद होते हैं, जांच होती है और राष्ट्र का अमूल्य समय इन विवादों में जाता है। आर्थिक-दुर्बलता के आधार पर आरक्षण होने पर वर्ग भेद समाप्त होता है और सामंजस्य स्थापित होता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सब एक पंक्ति में खड़े दिखायी देने पर परस्पर द्वेष तो दूर होती ही है, सामंजस्य व समानता का वातावरण बनता है। जाति बन्धन को कहीं कोई रखना चाहे तो अपने विवाह सम्बन्ध आदि के लिए नितान्त व्यक्तिगत रूप से रक्खे इसे राष्ट्रीय मान्यता नहीं मिलनी चाहिए। भारतीय संविधान जब सबको समानता का अधिकार देता है, तब उसका परिपालन होना चाहिए। भारतमाता के पक्ष पर घात-धातपर घात करके अपमान जनक आरक्षण की बात अब बन्द करना ही उचित है।

अभी कुछ दिवस पूर्व चिकित्सक वर्ण ने ''युवा समानता'' के ध्येय के एक क्षण में अपने वेतन-भत्ते बढ़ाने में पक्ष-विपक्ष सब एक हो जाते है, वैसे ही आरक्षण के सम्बन्ध में एक दूसरे कसे आगे निकलना चाहते हैं। यही कारण है कि वे इस आपदा को सार्वजनिक क्षेत्र से आगे व्यक्तिगत क्षेत्रों में भी ले जाना चाहते हैं। दलबन्दी के दल-दल में धसी सत्ता अधिक दिन तक नहीं चलती। आरक्ष्रण न सही किसी अन्य बिन्दु पर धराशायी हो ही जाती है।

किसी शासक ने अपने राज पुरोहित से परामर्श किया राष्ट्र के स्थायित्व के लिए कौन से ऐसे तीन बिन्दु हैं जिन पर राष्ट्र खड़ा रहता है। पुरोहित ने कहा- प्रजा, सद्भाव, अन्न और सेना शासक ने पूछा इनमें से किसी एक को छोड़ना पड़े तो किसे छोड़ सकते हैं। पुरोहित ने कहा–सेना को छोड़ दें पर प्रजा-सद्भाव व अन्न को न जाने दें।

शासक ने फिर पूछा- किसी बाध्यतावश दो वस्तुएं छोड़नी पड़े तो पुरोहित ने उत्तर दिया सेना, अन्न भले ही चले गये किन्तु प्रजा-सद्भाव को न जाने दे। प्रजा में सद्भाव होगा, तो वह घास-पात खाकर भी राष्ट्र की लड़ाई लड़ लेगी और विजयादर्श को वरण कर लेगी। अन्न भी आ जायेगा, सेना भी फिर खड़ी हो जायेगी पारस्परिक, प्रजा-सद्भाव से राष्ट्र गर्वोन्नत बना रहेगा। राष्ट्र नायक सावधान हो जाये। यह जातिगत आरक्षण प्रजा-सदभाव का विनाशक है। राष्ट्र सदैव रहेगा। सत्ता का आसन सदा नहीं रहने वाला। अपयश

रक्ष प्रवत्ति में ढल जाता है, अर्थात् अपने स्वार्थ की ही रक्षा करनी है, दूसरों से क्या प्रयोजन, तब इसी से विकसित होता है राक्षस, जिसे अक्षरों में परिचय हो जाता है वह 'साक्षरा' बन जाता है, किन्तु उसे इन अक्षरों में निहित अक्षय प्रभु व प्रकति के साथ समन्वयकारी जीवन लक्ष्य नहीं दिखायी देता है, तब वही साक्षराः राक्षसः बनकर स्वार्थान्ध हो जाता है। आज राष्ट्र में यही प्रवत्ति पनपकर नौकरी, विधानमण्डल, एवं शिक्षण संस्थाओं में सर्वत्र आरक्षण की मांग बन गयी है। कोई साधन विहीन दरिद्रता, दुर्बलता के आधार पर ऐसी माँग करे, वह तो ठीक, किन्तु जाति के आधार पर मांगना-कोई गौरव की बात नहीं है। आरक्षण प्रतिशत बढ़ाकर प्रलोभन दिया जाते हैं।

वेद ब्रह्ममण, उपनिषद्, वाल्मीकि, रामायण, महाभारत, तथा श्रीमद् भगवतगीता यहाँ तक तुलसीकत रामचरित मानस तक में आर्य सम्बोधन मिलता है, हिन्दू कहीं नहीं। अस्तु इन ग्रन्थियों में जाति विभाजन भी नहीं। मिलता है। केवल वर्ण व्यवस्था का सटीक वर्णन मिलता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण विश्व में सर्वत्र शिक्षक, रक्षक, वितरक एवं सेवक के पर्याप में मिल जाते हैं। इस दिशा में मनु महाभारत का स्पष्ट कथन दष्टव्य है।

चातुर्वण्य त्रायोलोकाश्च त्वाश्चाश्रमाः पथक। भूत भव्यं भविष्यं च सर्व वेदात् प्रसिध्यति।। मनु०१२.७७

अर्थात् चारों वर्ण, तीनो लोक और चारो पथक आश्रम तथा भूत विघटन की दीवारें खड़ी कर दी।

आग को कोई कितना ही दबाए, वह दाबकारी को जलाकर भी प्रकट हो जाती है। जाति-पांति की जंजीरों को तोड़कर लोग अपनी सुविधा व रूचि के व्यवसाय का चयन करते हैं। समाज भी उन्हें वैसे ही वर्ण की मान्यता देकर सम्बोधित करता है। आर्य समाज व उसके गुरूकुल आदि ने यह कार्य और भी सरल व व्यावहारिक बना दिया है। उच्च शिक्षा चिकित्सा, इंजीनियरिंग व अन्य कला, विशेष के सहपाठी युवक-युवती परिवार की सहमति से विवाह कर लेते हैं। समाज स्तर पर भी पिछड़े व दलित परिवार, सम्बन्ध बनाते हैं। घोड़ी व बाजा की साज-सज्जा के साथ बारात चढ़ाते हैं। सिरफिरे इसमें विघ्न डालते हैं, किन्तु शासन का संरक्षण प्राप्तकर वे अपनी कामना पूर्ण करते हैं।

सवर्ण स्त्री पुरुष, पिछड़े या सुरक्षित क्षेत्रों से चुनाव लड़ने में सफल हो जाते हैं। प्रकरण भले न्यायालय चला जाये, निर्णय भी चाहे कुछ हो, किन्तु प्रवत्ति जाति -पांति को तोड़कर वर्ण स्थापना की ही परिलक्षित होती है। यही नहीं लखनऊ-आगरा व अन्य नगरों में सफाई कर्मचारियों के कार्य के लिए आवेदन मांगे गये। बड़ी संख्या में आवेदन पत्र आये, जिनमें एक दो नहीं, हजारों आवेदन पत्र ब्राह्मण युवकों ने भेजे थे। इस पर समाचार पत्रों ने ''वर्णव्यवस्था को अलविदा'' शीर्षक से सम्पादकीय लिखे। वास्तव में यह जाति भेद की विदाई है व वर्ण व्यवस्था की पुनर्स्थापना है। वर्ण व्यवस्था कभी समाप्त नहीं हो अन्तर्गत गहन-घोर आन्दोलन छोड़ दिया था। जिसमें पिछड़े वर्ग के व्यक्ति भी सहयोगी थे। यह सत्याग्रह प्रतिभा, सम्मान व सदुपयोग के लिए सर्वत्र स्वागत योग्य माना गया। क्या कारण है कि शासक व विरोधी दोनों ही दल इस जातिगत आरक्षण पर एकमत रहते है। केवल इसलिए कि उनकी सत्ता खिसक न जाए। जैसे सांसद-विधायक जीते जी नायको को मार देता है, यश ही निधनोपरान्त भी राष्ट्रनायकों को अमर बनाए रहता है। अपने अमर पूर्वजों को याद करो, मरो नहीं,राष्ट्रनायकों अमर बनो।

— 'वरेण्यम्' एम.आई.जी ४५ पी, अवन्तिका -१, रामघाट मार्ग, अलीगढ़- उत्तर-प्रदेश। २०२००१

आर्यसन्देश - तृतीय अंक : स्वास्थ्य चर्चा

गाजर खाइये — गाजर

गाजर प्रकति का ब्लड बैंक हैं, इसका रस पीने वाले कभी खून की कमी के शिकार नहीं हो सकते। इसे सब्जियों की रानी माना जाता है। यह कुदरत की लेडी डॉक्टर है क्योंकि यह दवा भी है और दवाखाना भी। यह जमीन में पैदा होती है, अतः यह कन्द भी है और इसे सीधे ही खाया जाता है, इसलिए यह मूल भी है। इसे फलों में भी ऊँची पदवी प्राप्त है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में इसे नेत्र रंजनी कहा है। गाजर बीटा कैरोटीन तत्व की खान है, इसलिए एलौपैथी ने कैरोटीन नामक विटामीन अलग ही स्वीकार किया है। इसी कारण इसे अंग्रेजी में कैरेट कहा जाता है। गाय के दूध से बीस गुना अधिक विटामिन ए इसमें होता है। केवल १००—१५० ग्राम जूस ही प्रतिदिन की विटामिन ए की जरूरत पूरी कर सकता है। बच्चों को यदि गाजर जूस पिलाकर स्कूल भेजा जाए तो उनका स्वास्थ्य ज्यादा अच्छा रहेगा और उनका विकास भी तेजी से होगा। उनके पेट के सभी प्रकार के कीड़ों को यह मार देता है। अमेरिका और यूरोप में इसे मिरेकल जूस कहा जाता है क्योंकि इससे बहुत से पुराने रोग दूर किये जा सकते हैं। जो पुराने रोगी नहीं हैं वे शरीर की रोग—प्रतिकारक शक्ति पढ़ाने के लिए गाजर का रस लेते हैं। गाजर में सूर्य किरणें केन्द्रित रहती है, अतः जीवन प्रक्रिया के लिए बल प्रदान करने वाले तत्व इससे प्राप्त होते हैं। डॉ० क्राईल का कहना है कि ये किरणें शरीर के कोषों (सैल) में पहुंच कर जीवन शक्ति उत्पन्न करती हैं। अपने गुणों की दष्टि से गाजर शुद्ध सोने के समान है। इसके २०० ग्राम में ५,००० से भी ज्यादा विटामिन यूनिट होते हैं। आयुर्वेद ही नहीं, पश्चिम का वैज्ञानिक जगत भी मानता है कि गाजर अपने आप में पूर्ण भोजन है।

— शेष पष्ठ ६ पर

पृष्ठ 4 का शेष

Prakriti and souls and same truth, I am preaching to you. So we must follow the eternal Ved path which was adopted by our ancient Rishis too.

You or I, may think about God, Goddesses, Vishnu, Brahma, Shiv etc,. etc. but our thinking will totally go in vain if same does not tally with Vedas. This fact is according to Yog Shasta Sutra 1/7 .Our ideas/ thinking must tally with God otherwise will be considered false. The said fundamental law has been made by God in the Vedas. For example, God is omnipresent, therefore "Bhagwan Kann Kann Mein Hai" (i.e., God is present in each and every minutest particle or the largest one) But when the questions of worship arises then Vedas state that the God will be realized within the body of human beings. Vedas have stated about the path of worship which is to be followed. Vedas state that do not concentrate outside your body but go inside your body by means of name jaap, Yajyen, meditation etc. No doubt God is ownipresent, He is also in snakes, lizards, spiders, cockroaches etc., but it does not mean we must worship the stated living beings or any other living beings.

We have to worship according to Vedas, which is preached by God Himself and not by any man, woman etc. However, those who perform idol worship etc., may go ahead at their own. Rigveda Mandal 10, Sukta 129 states that only formless, omnipresent and Almighty God creates the universe from prakriti i.e., why in the beginning unsexual creation takes place. So, my daughter, your answer about creation, stating Shiv as the creator and his worship in such form representing his masculine power, does not tally with Vedas.

To be continued...

पृष्ठ 5 का शेष

गाजर खाएं.....

गाजर के सिरे पर जो लम्बी जुल्फें (बाल) होती हैं, वे लौह तत्व के भण्डार हैं। अतः उन्हें फेंके नहीं। गाजर की प्रकति तरगर्म है। गाजर तीन रंग की पायी जाती है। काली, हड्डियों के लिए फायदेमन्द है। दाँत और मसूड़ों के रोगों में लाभकारी है। दाँतों को मजबूत बनाने के लिए गाजर को चबाकर खाना चाहिए। खाना खाने के बाद एक गाजर खाने से मुँह के

आर्यजनता के द्वारा दिए गए अपार सहयोग से सभा द्वारा पुनर्निर्मित दीवानचन्द स्मारक, गोकुल चन्द आर्य चिकित्सालय, औचन्दी में

उपलब्ध सुविधाएं एवं विशेषज्ञ

सभा द्वारा संचालित दीवानचन्द स्मारक, गोकुल चन्द आर्य अस्पताल, गांव औचन्दी में अन्य विशेषज्ञों द्वारा भी अन्य रोगियों की जांच की जाती है, जिनका ओ.पी.डी. समय निम्न प्रकार है–

हृदय एवं छाती रोग विशेषज्ञ (Consultant Physician & Cardioligist)
डॉ० मुमुक्षु आर्य MBBS, MD, PCMS
सोमवार से शुक्रवार– प्रातः ६ से १ बजे एवं सायं ४ से ६ बजे तक
शनिवार– प्रातः ६ से १२ बजे तक

नेत्र रोग विशेषज्ञ (Eye Specialist)
डॉ० नरेन्द्र पाल सिंह MBBS, DOMS, FCLI
सोमवार–प्रातः ६ से १०.३० बजे तक

फिजियोथेरेपी (Physiotherapist)
डॉ० भूपेन्द्र भारद्वाज (BPT) प्रतिदिन प्रातः ६ से १ बजे तक

शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ (Surgeon)
डॉ० एस.के. हरीश MBBS, MS
बुध व शनि–सांय ४.३०–६.३० बजे
डॉ० अशोक भाटिया MBBS, MS
मंगल व शुक्र सायं ५.३०–७.३० बजे

स्त्री रोग विशेषज्ञ (Gynaecologist) **लेडी डॉ० अनिता हरीश** MBBS,
प्रत्येक बुधवार व शनिवार– सायं ४.३० बजे से ६.३० बजे तक

हड्डी रोग विशेषज्ञ **डॉ० विजेन्द्र कुमार** MBBS, MS,
प्रत्येक सोमवार व वीरवार–सांय ४ से ६ बजे तक

होम्योपैथिक ओ.पी.डी. **डॉ. कमल कुमार** (BHMS)
सोम से शनि– प्रातः ६ से १ बजे रविवार– सायं ५ से ७ बजे तक

साधारण ओ.पी.डी.:- प्रातः ६ से १ बजे तक, सायं ४ से ६ बजे तक (रविवार अवकाश)। **नोटः-** सभी प्रकार के ऑप्रेशन, डिलीवरी, लैबोरेट्री, एक्सरे, इ.सी. जी. का प्रबन्ध हो चुका है।

सोमदत्त महाजन	***डॉ० सी०एम० भगत***	***डॉ० मुमुक्षु आर्य***	***बलदेवराज सेठ***
अध्यक्ष	*संयोजक*	*मुख्य चिकित्सक*	*मन्त्री*

लाल व पीली। काली गाजर में लौह तत्व अधिक होता है।परन्तु लाल में विटामिन ए अधिक होता है, तथा इन दोनों में चांदी तत्व भी अधिक मात्रा में अधिक होता है। पीली गाजर में गुण व स्वाद कम होते हैं। गाजर का विटामिन ए आंखों के आगे अंधेरा छाना, कम दिखना, मोतियाबिन्द आदि में लाभकारी है, इसलिए आयुर्वेद ने इसे नेत्र रंजनी कहा है। इन रोगों को दूर करने के लिए गाजर के रस में पालक का रस (७५ प्रतिशत+२५ प्रतिशत) यदि मिलाकर प्रयोग किया जाये तो चमत्कारिक प्रभाव होता है। गाजर में कैल्शियम भी आलू से ६ गुना अधिक होता है। इसलिए यह दाँतों और सभी कीटाणु मर जाते हैं तथा चबाने से पाचक रस भी ज्यादा आते हैं, जिससे भोजन जल्दी पचता है। कैल्शियम की कमी को दूर करने के लिए महिलाएँ गोलियाँ लेती रहती हैं जिससे कन्धों में दर्द हो जाता है तथा अन्य साईड इफेक्ट होते हैं। २००ग्राम गाजर का रस प्रतिदिन पीने से यह कमी आसानी से दूर हो सकती हैं गाजर में विटामिन बी.सी.डी.ई.जी. तथा के. भी मौजूद हैं। इसका विटामिन बी. मस्तिष्क की कमजोरियों को दूर करता है, बुद्धि का विकास करता है, स्मरण शक्ति को तेज करता है। यही विटामिन जलोदर रोग में अपने खास तरीके से पानी को सुखा देता है।

पृष्ठ 4 का शेष

अपना राज्य नहीं रहा है। जो कुछ बचा भी है, वह भी विदेशियों से पादाक्रांता हो रहा है।

'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है, मतमतान्तर के आग्रहरहित, पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता–पिता के समान कपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं, परन्तु भिन्न–भिन्न भाषा, पथक–पथक, शिक्षा अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इनके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।'

वर्तमान सष्टि के निर्माण एवं वेदों के प्रकाश होने को एक अरब छयानवे करोड़ से भी अधिक वर्ष हो चुके हैं। इसे वराह, बैल या शेषनाग आदि ने नहीं उठा रखा, बल्कि परम सत्यस्वरूप उस परमेश्वर ने ही इस सष्टि को धारण किया हुआ है। सष्टि को नियमित नियम–विधान न रहे, तो यह सष्टि ही समूल नाश हो जायेगी। सूर्य अपने चारों ओर और पथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। पथ्वी के समान अन्य कई लोकों में भी प्राणी-सष्टि है, उनके आकारों में कुछ भेदादि होना संभव है। ये ही वेद सर्वत्र प्रकाशित हैं। एक ही परमात्मा की सष्टि में नियम -विधान एक सा ही हो सकता है।

वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्यसमाज रावत भाटा वाया कोटा राजस्थान द्वारा वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें आस–पास के विद्यालयों के कक्षा ६ से १२ वीं तक के ६०० छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में बच्चों ने काफी अच्छी प्रतिक्रियाएं दी। परीक्षा अक्टूबर २००७ में आयोजित की गयी थी, जिसका परिणाम २००८ जनवरी को घोषित किया गया। परीक्षा के लिए विद्यार्थियों को ''वैदिक रश्मि'' नामक पुस्तिका दी गयी थी। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के नाम इस प्रकार हैं– सिद्धि कौटियाल कक्षा–६, मोनिका कक्षा–६, अंजली मेघवाल कक्षा–६, नाहिद खान कक्षा–११, गीताबाई कक्षा–७, रजन जैन कक्षा–६, कुशल जिंगर कक्षा'८, विवेक पाण्डेय कक्षा–६, मांगीबाई कक्षा–६, विनय त्रिवेदी कक्षा–६, श्रीयांस कक्षा–६, श्रीकरण कक्षा–६, अजय मेघवाल–कक्षा–८, बोयजन्ती सरकार कक्षा–७।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने वाले को १००/–, द्वितीय स्थान पाने वाले को ५०/– और ततीय स्थान पाने वाले को २५/– नकद पुरस्कार दिये गये। अब यह प्रतियोगिता प्रत्येक वर्ष जुलाई में हुआ करेगी।

— योगेश आर्य, मन्त्री

आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)-१४१००२
दूरभाष-०१६१-२४५६५६३

प्रवेश सूचना सत्र-०८-०६

केवल छठी कक्षा (आयु +६ से –११ वर्ष) और सातवीं कक्षा (आयु +१० से –१२ वर्ष) में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण–पत्र (मूल्य केवल ५०/– रुपये) भरकर ३१.०३.२००८ तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं।

लिखित परीक्षा ०६ अप्रैल २००८ दिन रविवार को प्रातः ६.०० बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

— सत्यानन्द मुंजाल, कुलपति

भागीदार (पार्टनर) चाहिए

मान्यता प्राप्त विद्यालय की एक अन्य शाखा (१०+२) खोलने हेतु भागीदार (पार्टनर) की आवश्यकता है। विद्यालय के पास इन्दौर में लगभग १७५०० वर्ग फुट स्थान उपलब्ध है। १/३ एक तिहाई की भागीदारी हेतु सम्पर्क करें :–

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
अध्यक्ष, दयानन्द वैदिक स्कूल
२१६ संचार नगर एक्स,
कनाडिया रोड, इन्दौर (म०प्र०)
मोबाइल : ०६३२६८०६०५०,
दूरभाष : ०७३१-३२५६२१७

बसंत पंचमी पर विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

"पावका नः सरस्वती" वैदिक मन्तव्यो के अनुसार पुरातन काल से ऋषि–महर्षि वसंत पंचमी के उलक्ष्य में विशेष यज्ञों का पर्व उल्लास से मनाते रहे हैं। विद्या की देवी सरस्वती (परमात्मन शक्ति) हमें पवित्र, सर्वगुण सम्पन्न बनाये। ऋतु परिवर्तन की पावन बेला में हमारे, दुःख, दरिद्रय दूर हों– ये प्रवचन आचार्य सुभाष वेदालंकार ने आर्य समाज सै०–७ रोहिणी में पंचमहायज्ञ के अवसर पर दिया, इस अवसर पर उन्होंने यज्ञमानों को स्मति चिन्ह से सम्मानित भी किया।

आर्यसमाज के प्रधान अश्विनी आर्य, श्री सुरेन्द्र गुप्ता व अन्य पदाधिकारियों ने वसंत पंचमी पर उपस्थित यजमानों श्री प्रवीण कुमार गुप्ता, श्री शिवकुमार गुप्ता, श्री अशोक आर्य, श्री सुधीर अवेजा, श्री राजीव आर्य आयुष अग्रवाल, श्री आशीष–शालिनी, श्री संजीव–श्रीमती मीना मलिक, श्री धीरज सिंघल, श्री अश्विनी सिंघल, श्री भारत खण्डेलवाल व पत्रकार चन्द्रमोहन आर्य को बहुरंगा "ओ३म" चित्र भेंटकर अभिनन्दन किया।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामकिशोर शास्त्री थे। पंच यज्ञकुण्डों का सुप्रबन्ध ा श्री सुभाष त्रेहन, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री देवराज आर्य, व कर्मठ कार्यकर्ताओं ने किया।

वैदिक सत्संग मण्डल सैक्टर–७ जी–२१ ब्लाक में भी आर्य स्त्री समाज रोहिणी की ओर से सामूहिक वसंत पंचमी महोत्सव मनाया गया, जिसमें सौरभ आर्य, व कुमारी विधि आर्या यज्ञमान थे।

– सुदेश आर्या

धमवीर हकीकतराय बलिदान दिवस समरोह

दिनांक १७ फरवरी, २००८

स्थान : आर्यसमाज वाई ब्लाक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-२३

यज्ञ : प्रात ८.३० से ९.३० बजे ब्रह्मा : श्री रामानन्द आचार्य
भजन : श्री गुलाब सिंह राघव प्रातः ९.३० से १०.०० बजे
सांस्कतिक कार्यक्रम : रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के विद्याथियों द्वारा
संयोजक : श्रीमती अनिता कपिला (प्रधानाचार्य)
अध्यक्षता : श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता (प्रधान, द० दिल्ली वेद प्रचार सभा)

श्रद्धांजलि सभा : दोपहर १२ बजे

मुख्य अतिथिः श्री रामभज जी (पूर्व विधायक), श्रीमती कान्ता सिक्का
विशेष वक्ता : सर्वश्री ब्र०राजसिंह आर्य, धर्मपाल आर्य, शकुन्तला आर्या, सरला पाल, रामनाथ सहगल, बनारसी सिंह, विजय गुप्त।

द्वारका क्षेत्र में आर्यसमाज की स्थापना के लिए बैठक

गत दिनों द्वारका में आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य से उस क्षेत्र में रहने वाले समस्त आर्य महनुभावों को एकत्र करने के लिए तथा इस सम्बन्ध में आवश्यक चर्चा करने हेतु इस बैठक का आयोजन किया गया था। इस विषय में **अगली बैठक रविवार २४ फरवरी, २००८ को प्रातः ११ बजे यज्ञ के साथ आयोजित की गई है। बैठक श्री राजीव पुरी जी के निवास स्थान सी-१०६, प्रभा अपार्टमैंट, प्लाट नं. ११, सैक्टर- २३, द्वारका, नई दिल्ली-११००७५, मो०: 9810066177** पर रखी गई है।

हम सभी पाठकों से निवेदन करते हैं कि जिनके परिचित, जानकार, रिश्तेदार द्वारका क्षेत्र में रहते हों उनके नाम संयोजक को लिखवा दें तथा उन्हें इस बैठक के विषय में जानकारी अवश्य देवें तथा बैठक में सम्मिलित होने के लिए प्रेरणा प्रदान कर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में योगदान दें।

– श्रीमती अंजू नागपाल जी (संयोजक) मो० : 9868881274

आर्यसमाज पंखा रोड ''सी'' ब्लाक जनकपुरी में
सत्यार्थ प्रकाश संगोष्ठी का आयोजन

''सी'' ब्लाक जनकपुरी और इसके आस–पास की आर्यसमाजों ने मिलकर चार दिवसीय (१४ फरवरी से १७ फरवरी ,०८ तक) 'सत्यार्थ प्रकाश संगोष्ठी' का आयोजन किया गया है। इस आयोजन में सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम, अष्टम नवम और दशम समुल्लासों पर अधिकत विद्वानों के प्रवचन होंगे। हर दिन एक–एक समुल्लास पर चर्चा होगी। प्रवचन के उपरान्त आधे घण्टे का समय शंका समाधान का रहेगा। प्रवचन डॉ० रामप्रकाश (सांसद), डॉ० महावीर मीमांसक, धर्मपाल आर्य के होंगे। दिनांक १७ फरवरी प्रातः ९ से १० बजे प्रथम समुल्लास पर डॉ० रामप्रकाश प्रवचन होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कष्णा अरोड़ा करेंगी। समापन समारोह १७ फरवरी को आयोजित होगा। सभी महानुभाव सपरिवार, इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्म का लाभ उठाएं।

-: निवेदक :-

रामकष्ण सतीजा डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया भगवानदास आर्य जयपाल गर्ग
९८६८८९९२०२८ ९८१०९८२९३० ९२१३४६४९२३ ९३१२७८२४४४

वेदविद्या विहार, जुआं, सोनीपत में
त्रैवार्षिक वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर

डी०ए०वी० स्कूल, कॉलेज तथा सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों में मोलिक लेखन तथा रिसर्च को प्रोत्साहित करने के लिए

पुरस्कार घोषणा

२५-२५ हजार के दो पुरस्कार

साहित्य, कला, समाजशास्त्र, वैदिक साहित्य, भारतीय शोध विषयों पर मौलिक तथा रिसर्च लेखन पर पुरस्कार-सम्मान।

टाइप पाण्डुलिपि अथवा प्रकाशित पाण्डुलिपि की दो प्रतियां भिजवाएं। **प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि २६ फरवरी, २००८** है। पुस्तकें अंग्रजी तथा हिन्दी दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकती हैं। अप्रैल मास में एक भव्य समारोह में ये पुरस्कार दिए जाएंगे।

पुरस्कार चयन समिति :- सर्वश्री जी०पी० चोपड़ा (चेयरमैन), टी०एन० चतुर्वेदी, डॉ० वाई० एस० राजन, जस्टिस आर० एन० मित्तल, डॉ० चन्द्र प्रकाश, श्रीमती ऊषा एस० नायर, डॉ० एस०के० सामा, आर०एस० शर्मा, एवं श्री विश्वनाथ।

ये पुरस्कार राजपाल एजूकेशनल ट्रस्ट, दिल्ली के सौजन्य से **शहीद महाशय राजपाल जी की स्मति** में डी०ए०वी० कॉलेज मैनेजिंग कमेटी द्वारा आयोजित किए जा रहे हैं। डी०ए०वी० के सेवानिवत शिक्षक भी इस आयोजन में भाग लेने के लिए आमन्त्रित हैं। *– श्री ए०के० अदलखा (संयोजक)*

डी०ए०वी० कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त रोड, पहाडगंज, नई दिल्ली-५५

महर्षि जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव के अवसर पर

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार तथा युवाओं को आर्यसमाज में आने के लिए प्रेरित करने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई फिल्म

"सत्य की राह" वीसीडी

~~रुपये 50/–~~ **40/– रुपये में**

अपने बच्चों को अवश्य दिखाएं, भेंट तथा उपहार में देवें।

नोट : डाक द्वारा मंगाने पर डाक-व्यय पथक् से देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

इस वर्ष अप्रैल, २००८ से वेदविद्या विहार गुरुकुल, जुआं में त्रैवार्षिक वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर के संचालन का निर्णय लिया है। इस शिविर में आदर्श दिनचर्या के वातावरण में वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञान एवं शारीरिक विकास के साथ–साथ हरयाणा बोर्ड ओपन से ८वीं की परीक्षा दिलाने की व्यवस्था की जाएगी। शिविर एवं आर्ष विभाग में प्रवेश सम्बन्धी नियम व विशेषताओं की जानकारी हेतु सम्पर्क करें :–

आचार्य रवीन्द्र, वेद विद्या विहार,

ग्राम+डाक - जुआं, सोनीपत (हरयाणा), मो० : ०६४६६०२८१७१

शोक समाचार

श्री अशोक धवन का निधन

आर्यसमाज पुलबंगश के सदस्य श्री अशोक धवन का ११ फरवरी, ०८ को रुग्णावस्था में निधन हो गया। वे ५५ वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से स्थानीय श्मशानघाट पर किया गया।

श्री धवन बचपन से कमजोर थे पर सामाजिक, पारिवारिक, व्यवसायिक सेवा कार्यों में सदैव अग्रणी रहे। वे मधुर भाषी, मिलनसार एवं सहयोगवत्ती के व्यक्ति थे। वे अपने पीछे भाई–बहनों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। हिन्दू पर्व समारोह समिति सदर के प्रधान श्री बनारसी तनेजा व आचार्य अखिलेश भारती भी उनकी स्मति में आयोजित सभा में उपस्थित थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।– सम्पादक

छपते-छपते

श्री रोशनलाल गुप्त नहीं रहे

रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर के प्रबन्धक, अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति के महामन्त्री एवं दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के पूर्व मन्त्री तथा लम्बे समय तक आर्यसमाज के कार्यों को गति देने वाले श्री रोशनलाल गुप्ता जी का १४ फरवरी को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन सायं ४.३० बजे निगमबोध धाट पर किया गया।

साप्तहिक आर्य सन्देश

11 फरवरी, 2008 से 17 फरवरी, 2008

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १४/१५–०२–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली का
वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर वैदिक संस्कति, उत्तम शिक्षा के साथ–साथ विद्यार्थियों में अन्तर्निहित कलात्मक प्रतिभा को उजागर एवं विकसित करने के उद्देश्य से संचालित किया जा रहा है। रविवार दिनांक ३ फरवरी २००८ को दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। गायत्री मंत्र अर्थ सहित वाद्य वन्दों के साथ किया गया। हारमोनियम, तबले, ढोलक, कैसियो, चिमटा के साथ २७ बच्चों ने भाग लिया। बाद में वाद्य वन्दों के साथ बच्चों ने देश भक्ति की कई गांधी, लता मंजेशकर, आशा भोंसले आदि अनेकों महिलाओं पर भारत को गर्व है। दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि हमें सत्यार्थ प्रकाश को अवश्य पढ़ना चाहिए। बच्चों के अन्दर देश भक्ति जगाकर देश में फैली कुरीतियों को दूर करने का संकल्प लेना चाहिए। बच्चों के अन्दर देशभक्ति जगाकर देश में फैली कुरीतियों को दूर करने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने स्वामी दयानन्द एवं इन्कलाब जिन्दाबाद के नाटकों को प्रेरणादायक बताया। इस अवसर पर सर्व श्री जे०सी० खन्ना, उद्योगपति, आर०एन०राय एडवोकेट, श्री जे०के०

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्री के अवसर पर

विशाल ऋषि–मेला

६ मार्च, २००८ रामलीला मैदान, नई दिल्ली

यज्ञ : प्रातः ८:०० बजे

-: मुख्य आकर्षण :-

* खेल-प्रतियोगिताएं * भाषण-प्रतियोगिता * मध्याह्न गोष्ठी
* मधुर भजन एवं संगीत * सार्वजनिक सभा तथा * शास्त्रार्थ

सभी आर्यजन समय पर पहुंचकर आयोजन को सफल बनाकर पुण्यलाभ के भागी बनें।

निवेदक :- आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली

कॉलेज छात्रों का संगम बना आर्यवन रोजड़

गुजरात के साबरकांठा जिले में इतिहास, वर्तमान में भारत भूमि पर

धुनें बजाकर समां बांध दिया।

मुख्य अतिथि माननीय श्री रोबिन हिब्बू दिल्ली के सीनियर डी.सी.पी. ने जहां विद्यालय के सांस्कतिक कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की उसके साथ–साथ उन्होंने कहा कि बच्चों में भारतीय सभ्यता संस्कति के आधार पर देश प्रेम की भावना जागत कर विद्यालय अपने कर्तव्य की पूर्ति कर रहा है। भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, सुभाषचन्द बोस को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। महर्षि दयानन्द के उपकारों को सदा याद करना चाहिए।

ब्र० राज सिंह आर्य ने कहा कि भ्रूण हत्या एक पाप है महर्षि दयानन्द एक ऐसे सन्यासी थे जिन्होंने कहा था कि लड़कियों को शिक्षित करो। विद्यालय के बच्चों ने नसीहत दी कि आज लड़कियां लड़को से कम नहीं। एक प्रेरणादायक गीत के आधार पर उन्होंने बताया कि सानिया मिर्जा, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, इन्दिरा शर्मा, एस०एच०ओ०, सुभाष आर्य सदन नेता, विनय आर्य महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सुरेश मलिक चेयम मैन, सात मंजिला मंदिर राम कुमार गुप्ता अध्यक्ष अग्रसेन अस्पताल, पू० महापौर डॉ० अनिता बब्बर, निगम पार्षद यशपाल आर्य, डॉ० मीना ठाकुर, आर०एन० राय एडवोकेट, धर्मवीर खन्ना, जे०सी० झाम्ब, श्री सुनील कुमार गुप्ता लीगल आफीसर तिहाड़जेल , वेद प्रचार मण्डल के नवनिर्वाचित प्रधान सुरेन्द्र बुद्धिराजा, बलदेव राज सेठ, अनेकों आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री एवं सदस्यों कें साथ–साथ धार्मिक एवं सामाजिक, भारत विकास परिषद् आदि में अधिकारी गण एवं अभिभावकों की उपस्थिति ने वातावरण को आनन्दमय बना दिया था। बच्चों का उत्साह देखने योग्य था। विद्यालय के २१७ बच्चों को सांस्कतिक कार्यक्रम में भाग लिया।

– बलदेव राज आर्य-अध्यक्ष

जन्मदिन की शुभकामनाएं

सभा उप प्रधान श्री सोमदत्त जी महाजन का दिनांक १३ फरवरी को ८१वां जन्मदिवस मनाया गया। सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

स्थित रोजड ग्राम के वानप्रस्थ साधक आश्रम में दिनांक २५,२६,२७ जनवरी को कालेज के युवकों के लिए श्रेष्ठता व सफलता नामक त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में भाग लेने हेतु न केवल गुजरात के अपितु दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान,मध्यप्रदेश, ३६ गढ़, उड़ीसा, उ.प्र., उत्तरांचल, महाराष्ट्र आदि राज्यों के मेडिकल, आयुर्वेद, फार्मेसी, इंजिनियरिंग, मैंनेजमेंन्ट आदि उच्चस्तरीय विद्या शाखाओं के ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट स्तरके विद्यार्थी शिविर स्थल पर पहुंचे। शिविर के दौरान प्रातः ५ बजे से लेकर रात्रि के १० बजे तक कड़ाके की सर्दी में भी लगभग २७५ विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक विभिन्न कक्षाओं में भाग लिया।

शिविर में दिन भर चलने वाली विभिन्न कक्षाओं के अन्तर्गत स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा विद्यार्थियों की विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक जिज्ञासाओं एवं शंकाओं का दक्षता पूर्वक समाधान किया तथा आचार्य ज्ञानेश्वर जी द्वारा श्रेष्ठता और सफलता प्राप्ति हेतु संकल्प, साधन, विधि, अपेक्षित, पुरूषार्थ, तपस्या, प्राचीन भारत का गौरवमय मंड़राते संकट के बादल, आतंकवादी गतिविधियां आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

शिविर में विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु में ''परा विद्या'' नामक प्रश्नोत्तरी पुस्तक का प्रकाशन किया गया। अन्तिम दिन शिविरार्थियों की लिखित परीक्षा भी ली गयी जिसमें प्रथम, द्वितीय, स्थान प्राप्त किये शिविरार्थियों को क्रमशः ५,०००,२०००,१००० रूपयों की राशि से पुरस्कत किया गया। इसके साथ ही अन्य २० शिविरार्थियों को भी धार्मिक साहित्य के साथ ५००–५० रूपयों का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

२७ जनवरी के मध्यान्ह २ बजे समापन समारोह आरम्भ हुआ। रिलायन्स इन्डस्ट्रीज के उपनिदेशक, निष्ठावान आर्य श्री वीरेन्द्र जी गांधी ने समापन समारोह सम्मिलित होकर विद्यार्थियों को सादगी पूर्ण जीवन बिताने, एक दूसरे की सहायता करने तथा अपनी आवश्यकताओं को कम करने की प्रेरणा दी।

– ब्र० दिनेश कुमार, व्यवस्थापक वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन रोजड़ पत्रा. सागपुर, साबरकांठा, (गुजरात)

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**